प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403
Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

महान होता है परोपकारी : आचार्य महाश्रमण

सरदारषहर 17 मई।

आचार्य महाश्रमण ने अपने गुरु आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति करते हुए कहा कि अज्ञान तमीर को हरने वाले गुरु होते हैं। वे ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। पीछले सात दिनों से हम गुरुवर्य महाप्रज्ञजी की भक्ति कर रहे हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी में करुणा का भाव था। अहिंसा की साधना थी। दूसरों का उपकार करने की भावना थी। जो उपकारी होता है उसके प्रति राग भाव पैदा हो जाता है, कृतज्ञता के भाव आ जाते हैं। जो परोपकार करता है वह महान होता है।

उन्होंने कहा कि मृत्यु दुनिया की सच्चाई है। प्रकृति का नियम है। इस विषय में मनुष्य ज्यादा हस्तक्षेप नहीं कर सकता। खास बात है कि व्यक्ति कैसा जीवन जीता है। कितना परोपकार करता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने प्रवचन, साहित्य से मानव जाति की सेवा की है। आचार्य महाश्रमण ने पीछले वर्ष से प्रारंभ की गीता और उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन श्रृंखला का समापन करते हुए कहा कि युद्ध से प्रारंभ होने वाली गीता अनासक्ति स्थितप्रज्ञता का व्यापक संदेश देती है। उत्तराध्ययन आध्यात्मिकता की गहराई में जाने की अर्हता व्याख्यायित करता है। उन्होंने कहा कि पवित्र ज्ञान कहीं से भी प्राप्त होता है उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। ज्ञान वह होता है जो मैत्री, क्षमा, करुणा, अहिंसा की भावना विकसित करता है।

इस मौके पर साध्वी धनश्री, समणी निर्मलप्रज्ञा, समणी प्रणवप्रज्ञा, महेन्द्र श्यामसुखा ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)